I would, therefore, request the Government to take the necessary action and take an early decision for establishing the power station either at Valope or at Dabhol and commence the construction work.

(x) Demand for better service conditions for certain categories of employees in Post Offices

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : माननीय उपाध्यक्ष जी, पोस्ट आफिस के ई० डी० और सी० पी० कर्मचारियों की समस्या अत्यन्त गंभीर हो गई है। ई० डी० कर्मचारी 5 घंटे के स्थान पर आठ घंटे काम करके दो सौ रुपये से कम पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं और सी० पी० कर्मचारी अर्थात् चौकीदार 17 घटे कार्य करके 250 रुपये से भी कम प्रतिमाह प्राप्त करते हैं। सी० पी० कर्मचारियों को अवकाश भी नहीं दिया जाता तथा वे विभागीय परीक्षाओं में भी नहीं बैठने पाते। ई० डी० कर्मचारी 12-13 वर्षों तक काम करने के बाद भी नियमित नहीं किये जाते। अतः सरकार से मैं मांग करता हूं कि इन कर्मचारियों का वेतन बढ़ाया जाय और उनकी सेवायें नियमित की जाएं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: After three years of service as an E.D. employee, any employee can sit for the Class IV examination.

SHRI HARIKESH BAHADUR (Gorakhpur) : But, Sir, here they are facing a lot of difficulty.

MR. DEPUTY-SPEAKER : All the Class IV posts are reserved for E.D. employees. I know something about this.

SHRI HARIKESH BAHADUR : Even people who have been continuously working for 12 to 13 years....

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : They have to pass an examination.

SHRI HARIKESH BAHADUR : But they have not been able to sit in the examination.

(*Interruptions*)

14.36 hrs.

RAILWAY BUDGET, 1984-85 GENERAL DISCUSSION—*Contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER : We now take up General Discussion on Railway Budget for 1984-85. Time allotted was 10 hours and time already taken was 3 hours and 4 minutes. Now the time left is 6 hours 56 minutes. Now I call Shri J.S. Patil to speak. His Party has been allotted 18 minutes and another Member from his Party also has to speak on it. This is for your information.

Now Mr. J.S. Patil may speak.

श्री जगन्नाथ पाटिल (ठाणे) : उपाध्यक्ष महोदय, कल से रेल बजट पर चर्चा हो रही है। मेरे इस ओर के साथियों ने खासकर मधु दण्डवते जी ने रेल मंत्रालय की कार्यक्षमता के बारे में बड़ी अच्छी तरह से बता दिया है। मैं उन सब बातों को दोहराना नहीं चाहता। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा व्यापारी हमेशा नुकसान से बचने की कोशिश करता है। लेकिन हमारे रेल पति जी ने 70 करोड़ रुपए का घाटा दिखाया है। रेलपति इसलिए कहा है कि सब लोगों की एक पत्नी होती है लेकिन रेल मंत्री महोदय वेस्टर्न रेलवे, सेंटर रेलवे, नार्दन रेलवे और ईस्टर्न रेलवे इन सबका कारोबार देखते हैं। इन्होंने 70 करोड़ रुपये के घाटे का आटा रेल के पहियों को देशभर में चलाकर दिखाया है, यह बड़ी चिंता की बात है। आज रेलगाड़ियां जिस ढंग से चलती हैं उससे मुझे पुरानी फिल्म का एक गाना याद आता है "चलती का नाम गाड़ी" उसी खटारे की तरह रेलगाड़ियां आज देशभर में चल रही हैं।

रेल बजट प्रस्तुत करते समय चुनाव वर्ष को सामने रखकर 70 करोड़ का घाटा बताया गया